



THE
MENTORING
PROJECT

प्रतिशोध लेने से बचना: न्याय परमेश्वर पर छोड़ देना



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

प्रतिशोध लेने से बचना:
न्याय परमेश्वर पर छोड़ देना



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI

EDITOR: DR. LARRY OATS

(लेखक: डॉ. रिचर्ड परहाई)

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-वस्तु

परिचय	4
भाग I: व्यक्तिगत न्याय का भ्रम	6
भाग II: “प्रतिशोध” लेने की मूर्ति	11
भाग III: प्रतिशोध	14
भाग IV: परमेश्वर के हाथों में छोड़ देने की प्रक्रिया	17
भाग V: अन्तिम न्यायालय	21
निष्कर्ष	24



परिचय

जिम के हाथ काँप रहे थे। वह एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति है, उस प्रकार का मनुष्य जिसने चालीस वर्ष तक घरों के ढाँचे बनाने का काम किया है। उसकी उँगलियों के जोड़ों पर पड़े निशान धावों और कठिन परिश्रम की कहानी बताते हैं। वह सामान्यतः अधिक नहीं बोलता है। वह अपने काम को ही बोलने देता है। हम अपने घर के पीछे वाले बरामदे में बैठे थे। सूर्य धीरे-धीरे अस्त हो रहा था, और वह मुझे अपने व्यापारिक साथी के विषय में बताने का प्रयास कर रहा था। वह व्यक्ति एक बड़े काम का अन्तिम भुगतान की धनराशि लेकर भाग गया था। वह सब कुछ ले गया। लकड़ी के बिल अभी भी जिम की मेज पर ही बिना भुगतान के पड़े हुए थे, और मानो वे उसका मजाक उड़ा रहे थे।

“मैं उसे मिट्टी में मिला देना चाहता हूँ”, जिम ने कहा। उसने मेरी ओर नहीं देखा। वह अपने जूतों के बीच पड़ी हुई मिट्टी को देख रहा था। “मैं देखना चाहता हूँ कि उसका जीवन धुएँ में उड़ जाए। मैं वह व्यक्ति बनना चाहता हूँ जिसके हाथ में माचिस हो।”

मैं समझता हूँ। मेरा कहने का अर्थ यह है, कि मैं सचमुच उस भीतर उठने वाली जलन को समझता हूँ। यह एक विशेष प्रकार के न्याय की भूख होती है, जो ऐसा प्रतीत होती है कि मानो आपके सीने में बने हुए खालीपन को भर देगी। आप सोचते हैं कि यदि आप पलटकर वार करेंगे—यदि आप हिसाब बराबर कर देंगे—तो मन का बोझ हल्का हो जाएगा। परन्तु ऐसा नहीं होता है। अन्ततः आप उसी व्यक्ति से बैंध जाते हैं जिससे आप घृणा करते हैं। आप जागते हैं तो उसी के विषय में सोचते हैं। आप सोते हैं तो उसी संघर्ष को मन में दोहराते रहते हैं। उसने पहले ही आपका धन ले लिया है; अब वह आपकी आत्मा को भी ले रहा है। यह ऐसी सड़न है जो आपके हृदय के भीतरी हिस्से से आरम्भ होती है और धीरे-धीरे ऊपर की ओर फैलती चली जाती है।

परमेश्वर न्यायी है। हम इस बात को कलीसिया में भी कहते हैं, इसे अपने विश्वास-वचनों में भी सम्मिलित करते हैं, परन्तु जब लकड़ी के बिलों का भुगतान नहीं होता, तब हम वास्तव में इस पर विश्वास नहीं करते। हम सोचते हैं कि हमें उसका काम स्वयं करना होगा, क्योंकि वह वास्तविक संसार की उलझनों के लिए बहुत धीमे हैं या संभवतः बहुत अधिक कोमल हैं। परन्तु हमारे तराजू टूटे हुए हैं। जो व्यक्ति हमारे साथ अन्याय करता है, उसके लिए हम पूर्ण न्याय चाहते हैं और अपने लिए बहुत अधिक दया चाहते हैं। यह न्याय नहीं है; यह तो केवल और भी अधिक पाप है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

वाटिका में हुए पतन के समय से ही यह संसार पूरी तरह बिगड़ चुका है। लोग चोरी करते हैं। जीवनसाथी झूठ बोलते हैं। माता-पिता अपने उत्तरदायित्वों में असफल हो जाते हैं। और ऐसी न जाने कितनी और अव्यवस्थाएँ हैं। यह पतित संसार में जीवन बिताने का संघर्ष है, और यही आपको एक गहरी खाई में पहुँचा देता है। मैंने जिम से कहा कि उसे यह सब छोड़ देना चाहिए। मैंने उससे कहा, कि “आप वह काम करने का प्रयास कर रहे हैं जिसके लिए आपको नहीं ठहराया गया है। परमेश्वर ने कहा है कि पलटा लेना उसी का काम है। उसे ही पलटा लेने दें।”

यदि आप वास्तव में उस पर भरोसा करते हैं, तो यह बड़ी शान्ति की बात है। इसका अर्थ है कि आपको अपने साथ हुए हर अन्याय का लेखा लेने वाला व्यक्ति बनकर जागते रहने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपने किए से बच कर नहीं सकता है। प्रत्येक पाप का दण्ड दिया जाता है — या तो मसीह ने क्रूस पर उसके लिए वह दण्ड सह लिया, या फिर उस व्यक्ति को स्वयं उसका सामना करना पड़ेगा। परमेश्वर का न्याय-तराजू सिद्ध है। हमारे तराजू तो अस्त-व्यस्त हैं।

जिम ने पूछा कि इसे कैसे छोड़ दूँ। उसे लगा कि वह निर्बल हो रहा है, मानो वह हार मानकर पीछे हट रहा है। परन्तु मेरी बात सुनिप: चुप रहना चीखने से अधिक साहस का काम है। क्षमा कोई भावना नहीं है। यह एक निर्णय है। यह आपके अपने हृदय का प्रबंध है। यदि आप कड़वाहट को अपने भीतर रहने देते हैं, तो आप भीतर से सड़ जाएँगे। आप एक कठोर और निर्दयी व्यक्ति बन जाएँगे। आपके बच्चे भी आपके निकट नहीं रहना चाहेंगे। आप ऐसे चोर के दास बन जाएँगे जो आपके विषय में सोच भी नहीं रहा है।

क्रूस को देखिए। परमेश्वर ने केवल “इसे जाने नहीं दिया।” उसने अपने ही पुत्र पर दण्ड की आग उँडेल दी। यदि आप क्षमा नहीं करेंगे, या यदि आप उन मार्गों का आदर नहीं करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने आपके लिए निर्धारित किया गया है, तो आप यह कह रहे हैं कि यीशु पर्याप्त नहीं था। आप यह कह रहे हैं कि आपका न्याय उससे भी उत्तम है। ऐसी स्थिति में खड़ा होना भय उत्पन्न करने वाली बात है।

जिम को इसे समझने में बहुत समय लगा। हम प्रत्येक सप्ताह साथ में चाय पीते थे। कुछ दिन तक तो वह ठीक रहता था। परन्तु कुछ दिन के बाद वह उस व्यक्ति का चिल देखता तो उसके भीतर फिर से क्रोध की आग भड़क उठती थी। परन्तु वह न्यायी पर भरोसा करना सीखने लगा था। उसने उस कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया जो अभी उसके सामने था। वह समझ गया था कि उसका जीवन अब भी एक वरदान है। वह पीड़ित नहीं था। वह केवल एक ऐसा मनुष्य था जो चरवाहे का अनुसरण कर रहा था। मन में पाली हुई कड़वाहट को छोड़ दें। यह आपके कन्धों के लिए बहुत भारी बोझ है। न्यायी को अपना कार्य करने दें।

1

व्यक्तिगत न्याय का भ्रम

हम सबके भीतर वह जलन होती है। यह अपना लेखा बराबर करने की वह मूलभूत और तीव्र लालसा है। जब कोई आपके पैरों के नीचे से आधार खींच लेता है, या जब कोई जीवनसाथी उस जीवन को छोड़कर चला जाता है जिसे आपने बनाने में दशकों लगाए थे, तो आपकी पहली प्रतिक्रिया प्रार्थना करना नहीं होती है। यह परमेश्वर की प्रभुता पर विचार करना भी नहीं होता है। वरन् आप पलटकर प्रहार करना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि वे भी अपने हृदय में वही भारी पीड़ा और बोझ का अनुभव करें, जिसे आप सह रहे हैं। आप चाहते हैं कि न्याय का हिसाब बराबर करने वाले व्यक्ति आप ही स्वयं हों। हम इसे “न्याय” कहते हैं, क्योंकि यह शब्द सुनने में बहुत अच्छा लगता है। परन्तु यदि हम ईमानदारी से विचार करें, तो अधिकतर समय यह केवल पुरानी और स्वाभाविक प्रतिशोध लेने की अभिलाषा होती है। हम सोचते हैं कि यदि हम उन्हें उतना ही दुःख पहुँचा सकें जितना हम सह रहे हैं, तो संसार किसी न किसी प्रकार फिर से ठीक हो जाएगा। परन्तु ऐसा कभी नहीं होता है। यही वह भ्रम है। अर्थात् यह विचार करना कि आप अपने काँपते हुए हाथों और धुँधली समझ के साथ, कभी पूर्ण न्याय करने वाले हो सकते हैं, यह केवल एक कल्पना माल है, जो अन्ततः आपको जीते जी खा जाएगी।

न्याय का दृष्टीक्षेत्र अपने हाथ में लेने की यह तीव्र इच्छा आपके किसी खराब व्यापारिक समझौते या आपके टूटे हुए विवाह से आरम्भ नहीं हुई है। इसका आरम्भ एक वाटिका में हुआ था। जब हम उत्पत्ति 3 में पतन को देखते हैं, तो सामान्यतः हमारा ध्यान फल या सर्प पर जाता है, परन्तु वास्तविक सड़न परमेश्वर से स्वतंत्र होने की इच्छा थी। “तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे,” यह झूठ बोला गया था। और उन्होंने उस पर विश्वास कर लिया था। परमेश्वर के समान होने का एक हिस्सा यह है कि न्यायी बनने की इच्छा रखना है। जिस क्षण आदम और हवा ने वह फल खाया, हमने केवल अपनी निर्दोषता ही नहीं खोई; वरन् हमने अपना स्थान भी खो दिया। हमने परमेश्वर की सृष्टि के रूप में अपने स्थान को छोड़ दिया और सिंहासन पर बैठने का प्रयास करने लगे। और यह निश्चय किया कि भले और बुरे को निर्धारित करने वाले हम होंगे, और इसी के साथ यह भी कि दण्ड को लागू करने वाले भी हम ही होंगे। तब से, प्रत्येक मनुष्य का हृदय एक छोटा सा ऐसा न्यायालय बन गया है, जिसे उसने स्वयं स्थापित किया है। हम अपना जीवन अपने मन में लोगों पर मुकदमा चलाते हुए बिताते हैं। हम स्वयं अभियोग लगाने वाले, न्याय करने वाले और दण्ड देने वाले बन जाते हैं, और फिर आश्चर्य करते हैं कि हम इतने थके हुए क्यों हैं। इसका कारण यह है कि आपको और मुझे कभी भी उस कार्य के लिए ठहराया ही नहीं गया था। आपको संसार के न्याय और अन्याय का पूरा भार अपने कंधों पर उठाने के लिए नहीं बनाया गया था।

परन्तु फिर भी हम सदैव ऐसा करने का प्रयास करते रहते हैं। हम इन मनमुटावों को ऐसे सँभालकर रखते हैं, मानो वे कोई अनमोल विरासत में मिली वस्तुएँ हों। हम सोचते हैं कि यदि हम क्रोध को जलता हुआ रखेंगे, तो हम किसी न किसी प्रकार से अपनी रक्षा कर रहे हैं या शायद दूसरे व्यक्ति को उसके कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहरा रहे हैं। परन्तु क्या आपने कभी

ध्यान दिया है कि मनमुटाव आपकी हड्डियों के गूदे पर क्या प्रभाव डालता है? यह आपको कठोर बना देता है। यह आपको कड़ावाहट से भर देता है। यह आपको ऐसा व्यक्ति बना देता है, जो संसार को केवल इस दृष्टिकोण से देखता है कि मानो आपसे कुछ छीन लिया गया है। परम्परागत रूप से, हम पूर्ण पतनशीलता के विषय में बहुत बात करते हैं, और सामान्यतः हम इसे उन लोगों पर लागू करते हैं जिन्होंने हमें ठेस पहुँचाई है। हम उनका पाप स्पष्ट रूप से देखते हैं। हम उनका लालच, उनके झूठ और उनके घमण्ड को देखते हैं। परन्तु सबसे कठिन बात स्वीकार करना यह है कि पीड़ित व्यक्ति भी पूर्ण पतनशीलता के प्रभाव से अछूता नहीं है।

अब, मेरी बात को गलत न समझें। पीड़ित होना एक वास्तविक बात है। लोग बुरी बातें करते हैं, और उनके द्वारा पहुँचाया गया दुःख एक बहुत गहरी और भारी वास्तविकता होती है। परन्तु पीड़ित होने से आप पवित्र नहीं हो जाते हैं। इससे आपका हृदय न्याय का शुद्ध स्रोत नहीं बन जाता। क्योंकि आप पतित हैं, इसलिए आपका अपना “न्याय” लगभग हमेशा आपके अहंकार से प्रभावित होता है। आपके तराजू टूटे हुए हैं। जब कोई आपके विरुद्ध पाप करता है, तो आप केवल उचित प्रतिफल नहीं चाहते; आप पीड़ा की अधिकता चाहते हैं। आप तराजू को अपने पक्ष में झुकाना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि वह व्यक्ति आपके द्वारा अधिक दुःख भोगे। आपका “धार्मिक क्रोध” प्रायः उस कठोरता का मुखौटा होता है, जिसे आपने इस कारण उचित ठहरा लिया है कि पहले आपको ठेस पहुँचाई गई थी। यह मनुष्य की दशा की वास्तविकता है। हम इतने टूटे हुए हैं कि हम अपने ही घावों को दूसरों को घायल करने का बहाना बना लेते हैं। हम सोचते हैं कि हमारे साथ अन्याय हुआ है, इसलिए अब हमें न्यायाधीश, निर्णायक और दण्ड देने वाले बनने का अधिकार मिल गया है। परन्तु एक पापी, दूसरे पापी का पूर्ण और सही न्याय नहीं कर सकता है। आपके हाथ बहुत काँपते हैं, और आपका मन बहुत धोखा देने वाला है।

और फिर तलवार का भार भी है। हम ऐसे संसार में रहते हैं, जो हमें बताता है कि हमें हर कीमत पर अपने लिए खड़ा होना चाहिए, यदि हम बदला नहीं लेते, तो हम निष्क्रिय या निर्बल हो रहे हैं। परन्तु बाइबल एक भिन्न भाषा बोलती है। वह ऐसे परमेश्वर के विषय में बताती है, जिसकी प्रभुता और पवित्रता इतनी महान है कि उसे न्याय करने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं है। रोमियों 12 और 13 हमारे मन में धक्कते हुए आक्रोश की आग पर ठण्डे जल की बाल्टी के समान हैं। “बदला लेना मेरा काम है, मैं ही प्रतिफल दूँगा” प्रभु कहता है। यह कोई सुझाव नहीं है। यह अधिकार के स्वामित्व की घोषणा है। परमेश्वर ने बदला लेने का अधिकार अपने लिए रखा है, क्योंकि केवल वही धर्मी है और सही न्याय करता है। केवल वही मनुष्य के जीवन को—उसके पूरे इतिहास, छिपे हुए उद्देश्यों और जटिलताओं सहित—देख सकता है और ऐसा न्याय कर सकता है, जो वास्तव में न्यायपूर्ण हो।

जब आप उस तलवार को अपने हाथों में लेने का प्रयास करते हैं, तो आप दोहरे पाप में पड़ जाते हैं। हाँ, आप उस व्यक्ति के विरुद्ध पाप कर रहे हैं, जिसे आप ठेस पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि आप परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। आप परमेश्वर से कह रहे हैं कि उसका न्याय बहुत ही अधिक धीमा है, या उसका निर्णय पर्याप्त रूप से कठोर नहीं है। आप कह रहे हैं कि आप अधिक अच्छा जानते हैं। और यह खड़े होने के लिए एक बहुत भयावह स्थान है। बाइबल स्पष्ट है: परमेश्वर ने न्याय की तलवार अधिकारियों को, नागरिक शासकों को और उन व्यवस्थाओं को दी है जिन्हें उसने इस संसार को पूर्ण रक्तपात में गिरने से रोकने के लिए स्थापित किया है। उसने यह तलवार

प्रतिशोध लेने से बचना

आपको अपने घर के पीछे के आँगन या अपने कार्यालय में उपयोग करने के लिए नहीं दी है। जब आप स्वयं ऋण वसूल करने वाले बनने का प्रयास करते हैं, तो आप अपने निर्धारित दायित्व की सीमा से बाहर जा रहे होते हैं। यह शासन करने वाले अधिकारियों का दायित्व है, जो व्यर्थ में तलवार नहीं लेते हैं। परमेश्वर उन्हें अपना प्रतिशोध लेने वाले और सेवक कहता है, जो गलत काम करने वालों पर परमेश्वर के क्रोध को कार्यान्वित करते हैं। जब कोई हमारे साथ गलत करता है, तब इन अधिकारियों के साथ कार्य करने का एक समय होता है। परन्तु पवित्रशास्त्र सिखाता है कि भाइयों के बीच हुए गलत कार्यों को कलीसिया की सीमाओं के भीतर ही संभालना चाहिए। हमें उन्हें न्यायालय में नहीं ले जाना चाहिए। कुछ समय ऐसे होते हैं जब हमें केवल किसी गलत बात को अनदेखा कर देना चाहिए। परन्तु कभी-कभी बुद्धिमानी यह माँग करती है कि किसी गंभीर गलत कार्य की सूचना शासन करने वाले अधिकारियों को दे देनी चाहिए और उस विषय को उनके हाथों में छोड़ देना चाहिए। यह विशेष रूप से तब सत्य होता है जब किसी व्यक्ति का बार-बार अपराध करने का इतिहास रहा हो और यह चिन्ता हो कि वह हमारे बाद किसी और को हानि पहुँचाने के लिए फिर मुड़ सकता है।

वास्तव में विश्वास करने से मिलने वाली शान्ति के विषय में विचार करें कि परमेश्वर ने इस संसार में अपना प्रतिशोध लेने का कार्य का दायित्व दूसरों को सौंपा है। यदि आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर न्यायी है, तो आपको रात में जागकर यह सोचने की आवश्यकता नहीं है कि किसी को उसके किए का दण्ड कैसे दिया जाए। आपको स्वयं वह व्यक्ति बनने की आवश्यकता नहीं है, जो यह देखे कि उसका जीवन नष्ट हो जाए। आप वास्तव में अपने मन के न्यायालय से बाहर निकल सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि आपके साथ जो कुछ हुआ, वह महत्वहीन है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि झूठ या चोरी सब “ठीक था।” परन्तु इसका अर्थ यह है कि उस लेखे-जोखे को आपके हाथों से बेहतर हाथों में सौंपा गया है। वह केवल परमेश्वर के हाथों में हो सकता है। या आपकी कलीसिया के प्राचीनों के हाथों में हो सकता है। या बुद्धि के अनुसार शासन करने वाले अधिकारियों के हाथों में हो सकता है। इन विकल्पों में से किसी एक को चुनने के पीछे आपकी प्रेरणा से प्रायः यह समझा जा सकता है कि कौन सा मार्ग बुद्धिमानी का है। क्या उद्देश्य ठेस पहुँचाना है, या सहायता करना है, न केवल उन लोगों की जो भविष्य में पीड़ित हो सकते हैं, वरन् उन लोगों की भी जिन्होंने हानि पहुँचाई है?

परमेश्वर के संसार में कोई भी व्यक्ति किसी भी बात से बचकर नहीं निकल सकता है। न एक पैसा, न एक कठोर वचन, न एक विश्वासघात भुलाया जाता है। हर बात का लेखा लिया जाएगा। या तो मसीह ने क्रूस पर उस पाप के लिए वह दण्ड अपने ऊपर ले लिया, या फिर वह व्यक्ति स्वयं पवित्र परमेश्वर के श्वेत सिंहासन के सामने उसका सामना करेगा। किसी भी स्थिति में न्याय पूरा होगा। आपका काम रचना बने रहना है, रचयिता नहीं।

इस जीवन का संघर्ष निरन्तर चलता रहता है। कल फिर कोई आपके साथ अन्याय करेगा। कोई आपको मार्ग से हटाने का प्रयास करेगा, कोई आपके सामने झूठ बोलेगा, कोई आपके परिश्रम का श्रेय स्वयं ले लेगा। और फिर आपके भीतर क्रोध की ज्वाला भड़कने लगेगी। परन्तु “हाशिए वाला ईश्वर विज्ञानी” (प्रतिदिन का ईश्वर विज्ञान) यह जानता है कि अपनी आत्मा को खोए बिना उस लम्बे और सँकरे मार्ग पर चलने का एकमात्र उपाय यह है—कि अपने हाथ तलवार से दूर कर दें। चिल्लाने की अपेक्षा शान्त रहना अधिक साहस का कार्य है। स्वयं न्यायी बनने का प्रयास करने की अपेक्षा न्यायी पर

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

भरोसा रखना अधिक सामर्थ्य माँगता है। क्षमा करने का अर्थ दूसरे व्यक्ति को उसके कार्यों के परिणाम से बचा लेना नहीं है। क्षमा यह स्वीकार करती है कि उत्तरदायित्व का भार परमेश्वर के हाथ में है, आपके हाथ में नहीं। यह आपके अपने हृदय के प्रबन्धन से सम्बन्धित है।

यदि आप व्यक्तिगत न्याय के भ्रम को छोड़ने से इन्कार करेंगे, तो अन्ततः आप स्वयं वही बन जाएँगे जिससे आप घृणा करते हैं। आप इसे हर समय देखते हैं—ऐसे लोग जिनके साथ बीस वर्ष पहले छल लिया गया था, और आज भी वे उसकी चर्चा ऐसे करते हैं मानो वह घटना आज सुबह ही घटी हो। उनके चेहरे पर स्थायी रूप से क्रोध के कारण भौहें चढ़ी रहती हैं। उनके बच्चे भी उनसे दूर रहते हैं। वे उस ऋण के स्मारक बन गए हैं जो कभी चुकाया न ही गया। वे अतीत की एक छाया के दास बन गए हैं। क्या आप यही चाहते हैं? क्या आप ऐसा कठोर और क्रूर मनुष्य बनना चाहते हैं, जो एक चोर के साथ बंधा हुआ है?

प्राचीन मार्गों को देखिए। पुराने समय के पवित्र लोगों ने सताव को इसलिए सहन नहीं किया कि वे अपने शत्रुओं से अधिक अच्छा प्रतिशोध लेना जानते थे। परन्तु वे इसलिए स्थिर रहे क्योंकि वे जानते थे कि वे उस चरवाहे के पीछे चल रहे हैं जिसने पहले ही कन्न पर विजय प्राप्त कर ली है। वे जानते थे कि उनका जीवन मसीह में छिपा हुआ है, इसलिए वास्तव में कोई भी उनसे ऐसी वस्तु नहीं छीन सकता है जो पहले से ही परमेश्वर के संरक्षण में न हो। वे परमेश्वर की प्रभुता को किसी सूखे सिद्धान्त के रूप में नहीं, वरन् एक गहरे और जीवित सुरक्षा-कवच के रूप में समझते थे। यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में हैं, तो हमारा विरोध कौन कर सकता है? और यदि परमेश्वर न्यायी हैं, तो हम उसका न्याय का हथौड़ा छीनने का प्रयास क्यों कर रहे हैं?

मन में रखी हुई कड़वाहट को छोड़ दें। यह आपके लिए बहुत भारी है। आप तलवार के लिए नहीं बनाए गए थे; आप तो कटोरे और तौलिये के लिए बनाए गए थे। आप उसके पीछे चलने के लिए बनाए गए थे, जिसकी जब निन्दा की गई, तो बदले में उसने निन्दा नहीं की, वरन् स्वयं को उस न्यायी के हाथों में सौंपता रहा था जो न्यायपूर्वक न्याय करता है। यही नमूना है। यही एकमात्र मार्ग है जिससे आप ऐसे संसार में अपनी आत्मा को सुरक्षित रख सकते हैं, जो उसे टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है। न्यायी को अपना कार्य करने दें। वह आपसे उत्तम रीति से इसे करता है, और उसका तराजू कभी नहीं डगमगाता है। उसकी विधियों पर भरोसा रखें, जो इस संघर्ष को रहने देता है, और उसके अनुग्रह पर भरोसा रखें, जो उस गहरी खाई को ढक देता है। आप केवल एक मनुष्य हैं, एक ऐसा विश्वासी, जो धूल भरे मार्ग पर चल रहा है। अपनी दृष्टि क्रूस पर टिकाए रखें, जहाँ परम न्याय और परम दया का ऐसा मिलन हुआ, जिसकी कल्पना हमारे टूटे हुए तराजू कभी नहीं कर सकते थे।

यह भ्रम है कि जब आप बदला लेंगे, तो आपको अच्छा लगेगा। परन्तु सत्य यह है कि आप केवल खालीपन महसूस करेंगे। आपके सीने में जो गड्ढा है, वह किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन के विनाश से नहीं भर सकता है। वह केवल उस परमेश्वर की शान्ति से भर सकता है, जिसने पहले ही सबसे बड़े ऋण का निपटारा कर दिया है—अर्थात् आपके अपने ऋण का। जब आप महसूस करते हैं कि आपको कितना अधिक क्षमा किया गया है, तो दूसरों के ऋण बहुत छोटे दिखाई देने लगते हैं। इसलिए नहीं कि वे महत्वहीन हैं, परन्तु इसलिए कि जो जीवितों और मरे हुएओं का न्याय करने आ रहा है, उसने पहले ही सब कुछ नया करने की प्रतिज्ञा की है। आपको आग लगाने वाली तीली पकड़ने वाला बनने की आवश्यकता नहीं है। आपको

प्रतिशोध लेने से बचना

दण्ड देने वाला बनने की आवश्यकता नहीं है। आप केवल जिम हो सकते हैं, या जो भी आप हैं —एक बरामदे में बैठ कर ऐसे संसार की हवा में साँस लेते हैं, जो सब कुछ होने के बाद भी उस राजा के हाथों में थामा हुआ है जिसकी प्रभुता सर्वोच्च है।

हम घावों के निशान लिए हुए हाथों की गाँठों के साथ उस मार्ग पर चलते हैं, हाँ। परन्तु हमें उन गाँठों का उपयोग दूसरों को ठेस पहुँचाने के लिए नहीं करना है। हम उनका उपयोग वचन को थामे रहने के लिए करते हैं। हम उनका उपयोग अपने पड़ोसी की सेवा करने के लिए करते हैं। हम उनका उपयोग प्रार्थना में करते हैं, जब हम अपने मामलों को उस एकमात्र न्यायालय को सौंपते हैं जो वास्तव में महत्व रखता है। यही मसीही जीवन का धीरज है। यही सम्मान का भार और व्यक्तिगत न्याय के भ्रम का अन्त है। यह उसी दिशा में एक लम्बी आज्ञाकारिता है, कड़वाहट के बगीचे से दूर और परमेश्वर के नगर की ओर, जहाँ हर आँसू पोछ दिया जाएगा। क्योंकि उस नगर में तराजू सदा सिद्ध होते हैं, और राजा सदा न्यायी है।

2

“प्रतिशोध” लेने की मूर्ति

जब आप यह निश्चय कर लेते हैं कि आपकी शान्ति किसी दूसरे व्यक्ति के पश्चात्ताप करने पर निर्भर है, तब एक विशेष प्रकार की सड़न भीतर उत्पन्न होने लगती है। हम इसे “प्रतिशोध” लेना कहते हैं, परन्तु वास्तव में हमारा तात्पर्य यह होता है कि हमने अपने ही दुःख के लिए एक वेदी बना ली है। यह हमारी आत्मा में एक ऐसी बेचैनी होती है जो यह विश्वास करती है कि राहत केवल तभी मिल सकती है जब हम उस व्यक्ति को नीचा गिरते हुए देखें। परन्तु मसीही जीवन में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जिन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य वर्ष उस संतुलन की प्रतीक्षा में बिता दिए जो कभी आया ही नहीं। वे एक फोन कॉल, एक पत्र, या उस व्यक्ति की सच्चे पछतावे भरी दृष्टि की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं जो पहले ही आगे बढ़ चुका है। उस प्रतीक्षा में एक गहरी खाई खुल जाती है—एक ऐसा कारागार जिसे लोहे की सलाखों की आवश्यकता नहीं होती, केवल ऐसे हृदय की आवश्यकता होती है जो तब तक आगे बढ़ने से इन्कार करता है जब तक वह ये शब्द न सुन ले: “मैं गलत था।”

हम अपने आप से कहते हैं कि क्रोध में बने रहकर हम उन्हें उत्तरदायी ठहरा रहे हैं। हम सोचते हैं कि हमारी कड़वाहट एक हथियार है, परन्तु यह पतित हृदय का अहंकार है। जब आप रातों की नींद खो रहे होते हैं, तब सम्भव है कि वह व्यक्ति आराम से सो रहा होता है। आपका क्रोध उसके विरुद्ध कोई हथियार नहीं है, वरन् आपके ऊपर रखा हुआ एक भार है। आपको परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी की सेवा करने के लिए हृदय दिया गया था, परन्तु आपने उसे एक छोटे, अन्धकारमय कमरे में बदल दिया है, जहाँ आप अपने जीवन के उन्हीं पाँच मिनटों को बार-बार दोहराते रहते हैं। यही पतन का संघर्ष है। यदि आपकी आत्मा उसके पश्चात्ताप की बेड़ियों में बँधी हुई है, तो आप स्वतन्त्र नहीं हैं। आप उसकी उदासीनता के दास हैं।

परन्तु इससे भी अधिक गहरा भय है: शत्रु का दर्पण। हम इस विषय में बात करना पसन्द नहीं करते, परन्तु दर्पण झूठ नहीं बोलता। जब आप अपनी रातें अपनी जीभ को तेज करने और उन कटु वचनों को दोहराने में बिताते हैं जिन्हें आप कहने वाले हैं, तब वास्तव में आप अपनी आत्मा को उसी व्यक्ति के स्वरूप में ढाल रहे होते हैं जिससे आप घृणा करते हैं। कड़वाहट एक मूर्तकार है। वह धीरे-धीरे आपकी दयालुता और आनन्द की क्षमता को काटती चली जाती है, जब तक कि आप ठीक उसी व्यक्ति के समान न दिखाई दें जिसने आपको ठेस पहुँचाई थी। आप उसकी निर्दयता से घृणा करते हैं, परन्तु आपका हृदय निर्दयी होता जा रहा है। आप सोचते हैं कि आप न्याय खोज रहे हैं, परन्तु वास्तव में आप उसी अन्धकार का अभ्यास कर रहे हैं जिसका उपयोग आपके विरुद्ध किया गया था। यदि आप बहुत देर तक अन्धकार को देखते रहेंगे, तो अन्ततः आप उसे धारण करने लगेंगे।

प्रतिशोध लेने से बचना

फिर भी अपने सही होने का हमारा दावा प्रायः अहंकार का छिपा हुआ रूप होता है। हम पतित प्राणी हैं, और हमारे तराजू सदा हमारे ही पक्ष में झुक रहे होते हैं। जब हम “प्रतिशोध लेने” का प्रयास करते हैं, तब हम समानता नहीं खोज रहे होते हैं। परन्तु हम चाहते हैं कि दूसरे व्यक्ति को हमारे दुःख से भी अधिक पीड़ा मिले। हम परमेश्वर का स्थान लेने का प्रयास करते हैं, क्योंकि हम नहीं चाहते कि वह इन बातों का लेखा-जोखा संभालें। हमें लगता है कि उसकी विधियाँ बहुत धीमी हैं या उसका अनुग्रह बहुत अधिक है। हम ऐसा संसार चाहते हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को ठीक वही मिले जिसके वह अभी योग्य है—परन्तु हमें नहीं। हम तो अपने लिए दया चाहते हैं। परन्तु जिस मनुष्य ने हमें धोखा दिया है? हम चाहते हैं कि उस पर आग बरसाई जाए।

बाइबल इस क्रोध को छोड़ने का एक मार्ग प्रस्तुत करती है, जो कोई मनोवैज्ञानिक युक्ति नहीं है। यह एक दृढ़, ईश्वर विज्ञान सम्बन्धी समर्पण है। यह इस बात को स्वीकार करना है कि केवल परमेश्वर ही परमेश्वर है आप नहीं हैं। छोड़ देने का अर्थ यह स्वीकार करना है कि ऋण वास्तविक है, परन्तु उस लेखे को सम्पूर्ण पृथ्वी के न्यायी और उद्धारकर्ता के हाथों में सौंप देना है। यह दुर्बलता नहीं है; वरन् यह विश्वास का सर्वोच्च रूप है। क्रोध में बने रहने के लिए किसी सामर्थ्य की आवश्यकता नहीं होती है। एक मूर्ख भी क्रोधित हो सकता है। परन्तु शान्त रहने और धूल में पड़े रहने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य की आवश्यकता होती है, इस भरोसे के साथ कि प्रभु ने दिया है और प्रभु ने ही ले लिया है।

हमें क्रूस की ओर देखना चाहिए। यही वह स्थान है जहाँ “प्रतिशोध लेने” की मूर्ति अन्ततः चकनाचूर हो जाती है। क्रूस पर हम देखते हैं कि पवित्र परमेश्वर के लिए न्याय वास्तव में कैसा दिखाई देता है। वह निर्दोष के लहू के समान दिखाई देता है। यदि आप न्याय चाहते हैं, तो वहाँ देखें। यदि आप दया चाहते हैं, तो वहाँ देखें। परन्तु आप क्रूस के नीचे खड़े होकर परमेश्वर से यह कहने का साहस न करें कि जिस मनुष्य ने आपको धोखा दिया है, उसके लिए उसका न्याय पर्याप्त नहीं है। जब आप यह महसूस करते हैं कि आपके अपने ऋण के लिए परमेश्वर की मृत्यु आवश्यक हुई, तब दूसरों के ऋण आप पर अपना अधिकार खोने लगते हैं।

टूटे हुए सम्बन्ध के प्रबन्धन का उद्देश्य जीतना नहीं है; वरन् विश्वासयोग्य बने रहना है। जब आप नियन्त्रण करने वाली मूर्ति को छोड़ देते हैं, तब आप वास्तव में स्वयं को स्वतन्त्र होने देते हैं। आप न्यायालय से बाहर निकलकर फिर से उजियाले में आ जाते हैं। आप यह निर्णय लेते हैं कि आप संसार के न्यायी बनने की अपेक्षा पिता के पुत्र बनना अधिक पसन्द करेंगे। यहीं से शान्ति बढ़ने लगती है—ऐसी शान्ति जो उस संसार की समझ से परे है, जो केवल लेखा-जोखा रखने में लगा रहता है।

दैनिक जीवन में, इसका अर्थ यह है कि जब बातचीत अतीत की बातों की ओर मुड़ती है, तब उस पुराने घाव को फिर से न छेड़ना। इसका अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति से आप घृणा करना चाहते हैं, उसके प्राण के लिए प्रार्थना करना—केवल कोई मधुर शब्दों से भरी प्रार्थना नहीं, वरन् एक ऐसी गम्भीर प्रार्थना जो परमेश्वर की पवित्रता से उसके साथ व्यवहार करने और उसकी दया से आपके साथ व्यवहार करने की विनती करती है। आप किसी चोर के कारण पीड़ित व्यक्ति मात्र नहीं हैं; आप राजा की देखरेख में रखे गए व्यक्ति हैं। और राजा निर्धन नहीं है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

अपने मन का बैर छोड़ दें। यह आपके लिए बहुत भारी है। अपने अहंकार की मृत्यु और इस संसार में परदेशी के समान जीवन को चुनें। मार्ग लम्बा है, परन्तु यह उस घर की ओर ले जाता है जहाँ तराजू अन्ततः, पूर्ण रूप से और अनन्तकाल के लिए स्थिर हैं।

3

प्रतिशोध

हम प्रायः पवित्रशास्त्र के “गंभीर” शब्दों को ऐसे मानते हैं, मानो वे किसी संग्रहालय में रखी हुई अमूर्त वस्तुएँ हों। जब हम “प्रतिशोध” जैसे शब्द को देखते हैं, तो उसे कोमल बनाने का प्रयास करते हैं। हम उसे कुछ ऐसा बना देना चाहते हैं जो सभ्य लगे, जिसमें वास्तविकता की गन्ध न हो। परन्तु बाइबल ऐसा नहीं करती है। वह हमारी पीड़ा की शब्दावली के साथ कोई खेल नहीं खेलती। जब पौलुस रोमियों 12 में लिखता है, “बदला लेना मेरा काम है,” तो वह ऐसे शब्द का प्रयोग करता है जिसमें गम्भीरता है—ऐसी गम्भीरता जो भीतर तक अनुभव होती है और जिसकी धार तेज होती है। वह केवल हल्की सी अप्रसन्नता की बात नहीं कर रहा है। वह उस पवित्र और भय उत्पन्न करने वाले अधिकार की बात कर रहा है, जिसके द्वारा प्रभुता करने वाला परमेश्वर इस टूटे हुए संसार के सारे लेखे-जोखे का निपटारा करता है।

जिस व्यक्ति का हृदय अन्धकारमय विचारों से भरा हुआ है और जो अपने बरामदे में बैठा है, उसके लिए यह कोई धमकी नहीं, वरन् यह एक राहत है। यह वह सबसे बड़ी राहत है जिसे आप कभी अनुभव करेंगे। परमेश्वर को यह कहते हुए सुनना, कि “बदला लेना मेरा काम है,” यह सुनना कि वह कह रहा है, कि “अब आप तलवार नीचे रख सकते हैं।” यह वह क्षण है जब आप महसूस करते हैं कि सारी पृथ्वी का न्यायी उस अन्धेरे कमरे में हुई हर बात को ठीक-ठीक देख रहा था। उसने देखा कि धन किस प्रकार लिया गया। उसने देखा कि झूठ किस प्रकार बोला गया। उसने उस व्यक्ति के चेहरे की व्यंग्यपूर्ण मुस्कान देखी, जो सोचता था कि वह अपने किए से बच निकला है। और इससे भी अधिक—उसने वह देखा जिसे आप नहीं देख सके। उसने आपके उद्देश्यों को देखा। उसने छिपे हुए विश्वासघातों को देखा। उसने उस सड़न की पूरी सीमा को देखा। और वह कहता है, कि “मैंने इसे ले लिया है।”

हम जागते रहते हैं, क्योंकि हमें लगता है कि स्मरण रखने वाले केवल हम ही हैं। हम सोचते हैं कि यदि हम क्रोधित होना छोड़ देंगे, तो पाप बिना किसी दण्ड के और बिना स्मरण किए ही शून्य में विलीन हो जाएगा। परन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था में कुछ भी भुलाया नहीं जाता। हर कार्य का लेखा रखा जाता है। हर आँसू इकट्ठा किए जाते हैं। जब आप प्रतिशोध लेना परमेश्वर को सौंप देते हैं, तो आप यह नहीं कह रहे होते हैं कि अपराध का कोई महत्व नहीं था। आप यह कह रहे होते हैं कि अपराध को ठीक प्रकार से सम्भालने वाला केवल वही है, जिसका न्याय का तराजू कभी नहीं डगमगाता है। आप यह भरोसा कर रहे होते हैं कि परमेश्वर आपसे कहीं अधिक योग्य, कहीं अधिक पवित्र और कहीं अधिक भय उत्पन्न करने वाला न्यायी है, जिसके समान न्याय करना आपके लिए कभी सम्भव नहीं हो सकता है। आप न्याय करने के अपने स्थान को छोड़ देते हैं और सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी को न्यायासन पर बैठने देते हैं।

क्षमा की दृढ़ता

परन्तु फिर हम उस शब्द तक पहुँचते हैं, जिससे हर कोई पीछे हट जाता है: अर्थात् क्षमा। हमने इसे एक हल्की-फुल्की और कोमल बात बना दिया है—ऐसी बात जिसमें “छोड़ देना” और अपनी “आन्तरिक शान्ति” को पाना सम्मिलित है। परन्तु यह बाइबल आधारित क्षमा नहीं है। बाइबल आधारित क्षमा दृढ़ता और गहरी वास्तविकता से बनी हुई है। यह कोई भावना नहीं है। वास्तव में, यदि आप क्षमा करने की भावना आने की प्रतीक्षा करेंगे, तो आप अपनी कड़वाहट में तब तक बैठे रहेंगे, जब तक कि वे आपके ताबूत को कब्र में न उतार दें।

क्षमा यह निर्णय करना है कि ऋण को क्रूस के चरणों में छोड़ दिया जाए। यह आत्मा का एक कानूनी लेन-देन है। आप उस व्यक्ति को देखते हैं, जो आपकी प्रतिष्ठा, आपका धन, आपका बचपन या आपकी शान्ति का ऋणी है—और आप उस ऋण को देखकर कहते हैं, कि “मैं इसे तुमसे वसूल नहीं करूँगा।” आप यह नहीं कह रहे हैं कि ऋण वास्तविक नहीं है। आप यह भी नहीं कह रहे हैं कि जो हुआ वह “ठीक था।” आप यह कह रहे हैं कि ऋण का लेखा स्थानान्तरित कर दिया गया है। आप अपने पास रखे हुए उस लेखे को निकालकर उस वृक्ष पर कीलों से ठोक देते हैं, जहाँ मसीह ने मनुष्य की पापमय दशा के लिए अपना लहू बहाया है।

यह सबसे कठिन कार्य है जिसे आप अपने जीवन में करेंगे। यह “खाई का प्रबन्ध” करना है। आपको हर सुबह यह निर्णय लेना होगा कि आज आप ऋण वसूलने वाले नहीं बनेंगे। जब वह स्मरण फिर से लौटता है और भीतर क्रोध की आग भड़कने लगती है, तो आपको उस आग को देखकर कहना होगा, “नहीं। यह प्रभु का काम है।” यह एक कठिन और निरन्तर होने वाला समर्पण है। यह ऐसा महसूस करना है कि यदि आप दूसरों के ऋणों को वसूल करने पर अड़े रहते हैं, तो वास्तव में आप परमेश्वर से कह रहे हैं कि आपके प्रति उसकी दया एक भूल थी। आप कह रहे हैं कि आप “आँख के बदले आँख” वाले संसार में रहना अधिक पसन्द करेंगे, न कि “टूटे हुएओं के लिए अनुग्रह” वाले संसार में। क्षमा यह निर्णय लेना है कि आप बाद वाले संसार में जीवन बिताएँगे, भले ही वह किसी अंग को सीधा किए जाने वाली जैसी पीड़ा ही क्यों न दे।

आग के अंगारे

और फिर व्यवहारिक संघर्ष आता है—अर्थात् जीवन-पथ पर इसका “कैसे करें” वाला पक्ष आता है। पौलुस हमें बताता है कि अपने शत्रु को भोजन कराएँ और उसे पीने के लिए पानी दें। वह कहता है कि ऐसा करने से हम उसके सिर पर “जलते हुए अंगारों का ढेर” लगाएँगे। अब, कुछ लोग इसे प्रतिशोध लेने के एक छिपे हुए तरीके के रूप में उपयोग करते हैं—वे सोचते हैं कि यदि वे पर्याप्त “अच्छे” बन जाएँगे, तो उन्हें अपने शत्रु को पीड़ा में देखने का अवसर मिलेगा। परन्तु यह भी केवल अभिमान है। यह रविवार के दिन के अच्छे वस्त्र पहना हुआ प्रतिशोध लेना है।

आग के अंगारे पाप की गहरी चेतना के भार के विषय में हैं। जब आप बुराई का उत्तर शान्त और दृढ़ भलाई से देते हैं, तो आप ऐसा संघर्ष उत्पन्न करते हैं जिसे संसार समझ ही नहीं सकता है। आप उन्हें ऐसा अनुग्रह दिखाते हैं जिसे उन्होंने अर्जित नहीं किया और जिसे वे सँभालना नहीं जानते, और इस प्रकार शत्रु को अपने स्वयं के पाप की वास्तविकता का सामना करने के लिए विवश करते हैं। बिना इसके कि आप कभी अपनी उँगली भी उठाएँ। यही “हाशिए पर ईश्वर विज्ञान” व्यवहार में दिखाई देता है: अर्थात् किसी विषय के हृदय को अपने चरित्र के मूल तत्व को निर्धारित करने से इन्कार करना है।

प्रतिशोध लेने से बचना

जो लोग आपसे घृणा करते हैं, उनके साथ व्यवहार करना पाँव के नीचे कुचले जाने वाला व्यक्ति बनना नहीं है ; यह एक दीवार बनने के समान है। अर्थात् खराई की ऐसी दृढ़ दीवार, जो किसी भी परिस्थिति में नहीं ढहती है। कभी -कभी ”भलाई करना“ निर्दोषों की रक्षा करने वाली दृढ़ और कठोर सीमा बनाए रखने की दृढ़ता का अर्थ रखता है। कभी -कभी इसका अर्थ उस व्यक्ति का मौन होता है, जो जानता है कि उसके पास उत्तम उत्तर है, परन्तु वह क्रूस को चुनता है। आपको हर उस वाद-विवाद में सम्मिलित होने की आवश्यकता नहीं है, जिसमें आपको बुलाया जाता है। आप अपनी शान्ति के प्रबंधक हैं, और आप अपनी आत्मा को राजा के अतिरिक्त किसी और के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं।

टूटे हुए मार्ग का प्रबन्धन

हम इन प्राचीन मार्गों पर इसलिए चलते हैं, क्योंकि वे हमें उस स्थान तक ले जाते हैं जहाँ प्रत्येक ऋण का अन्तिम निपटारा हो चुका है। प्रतिशोध लेना और अनुग्रह की भाषा ही हमारे कठोर जीवन की वास्तविकता को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त है। हम पतित मनुष्य हैं, जो पतित मनुष्यों के बीच जीवन बिताते हैं। यहाँ पसीना है, लहू है, परन्तु यहाँ क्रूस भी है। वही वृक्ष प्रत्येक बैर का अन्तिम उत्तर है—अर्थात् वही स्थान जहाँ परमेश्वर का पवित्र प्रतिशोध और उसकी दया एक-दूसरे से मिलते हैं। आपको न्याय करने वाला बनने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपके लिए न्यायी पहले ही न्याय का दण्ड सह चुका है।

अन्ततः जिम समझ गया था कि प्रतिशोध की तीली हाथ में पकड़े रहना उसे स्वामी नहीं, वरन् दास बना रही थी। उसने उस विषय को प्रभु के हाथों में छोड़ दिया और अपने बड़ई के कार्य पर लौट गया। घाव अभी भी बने हुए थे, और बिलों का भुगतान करना भी अभी शेष था, परन्तु उसके भीतर की सड़न समाप्त हो गई थी। अब वह पीड़ित व्यक्ति नहीं रहा। इसके स्थान पर, वह ऐसा मनुष्य बन गया था जिसने इतनी क्षमा प्राप्त की थी कि एक चोर को जाने दे सके। वह उसे परमेश्वर के हाथों में छोड़ सकता था।

न्यायालय की भाषा को छोड़कर वाचा की भाषा को अपनाएँ। न्यायी को अपना कार्य करने दें, जबकि आप मार्ग पर चलते रहें। मार्ग संकरा है, और संघर्ष वास्तविक है, परन्तु चरवाहा आपके साथ है। उसके तराजू अनन्तकाल तक और पूर्ण रूप से स्थिर हैं।

4

परमेश्वर के हाथों में छोड़ देने की प्रक्रिया

रविवार की सभा में बैठे हुए यह मान लेना कि परमेश्वर न्यायी है, एक बात है। परन्तु मंगलवार को उसी व्यक्ति को किराने की दुकान में देखना, जिसने आपके विषय में झूठ बोला था, दूसरी बात है। वह “ताप” बढ़ने लगता है—हृदय तेजी से धड़कने लगता है, और हाथ संघर्ष करने के लिए आतुर होने लगते हैं। यह पतन का संघर्ष है; आपका शरीर अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया में विरोध करता है, क्योंकि संसार टूटा हुआ है। हम प्रायः इस उबाल को बदला लेने के लिए ईंधन समझ लेते हैं, परन्तु दया के मार्ग पर चलने के लिए एक भिन्न प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

आपका पहला कार्य बोलना या तुरन्त क्षमा कर देना भी नहीं है। आपका पहला कार्य यह स्वीकार करना है कि आपके हृदय की गति पर भी परमेश्वर का अधिकार है। वह किराने की दुकान की उस पंक्ति में भी उतना ही उपस्थित है, जितना वह सीनै पर्वत पर था। दया का अर्थ है कि ऐसा दृढ़ निर्णय लेना जो अपनी शारीरिक प्रतिक्रिया को अपने विश्वास का निर्धारण करने की अनुमति न दें। आपको किसी दृश्य को बनाने या बनावटी मुस्कान दिखाने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी सबसे विश्वासयोग्य कार्य केवल चलते रहना ही होता है। आपकी प्रतिष्ठा आपकी अपनी नहीं है कि आप उसकी रक्षा करें। यह परमेश्वर का दिया हुआ वरदान है। यदि वह उसे कलंकित होने देता है, तो उस मैल में भी उसका एक उद्देश्य है। अतः साँस लें और स्मरण रखें: कि आप राजा की देखरेख में हैं।

सीमाएँ बनाम कड़वाहट

अब हमें सीमा के ईश्वर विज्ञान की समझ के विषय में बात करनी होगी। हमारे बीच एक विशेष प्रकार का भ्रम पाया जाता है: हम सोचते हैं कि “क्षमा” का अर्थ भेड़िए को फिर से भेड़शाला में आने देना है। हम सोचते हैं कि यदि हम उसी व्यक्ति के द्वारा बार-बार ठेस पहुँचाए जाने की अनुमति नहीं देते, तो किसी प्रकार हम “मसीह के समान नहीं” या “कड़वाहट से भरे हुए” हो जाते हैं। परन्तु यह प्राचीन मार्गों की समझ का गलत अर्थ निकालना है।

क्षमा अतीत के विषय में है; सीमाएँ भविष्य के विषय में हैं। क्षमा का अर्थ क्रूस के पास उस ऋण को छोड़ देने का निर्णय लेना है। इसका अर्थ है कि स्वयं को उस ऋण का वसूल करने वाला बनने से इन्कार करना। परन्तु सीमा आपके अपने जीवन और उन लोगों के जीवन के प्रबन्धन से जुड़ी हुई होती है जिन्हें परमेश्वर ने आपकी देखभाल में रखा है। यदि कोई व्यक्ति आपके व्यवसाय में से चोरी करता है, तो आप प्रतिशोध लेने को परमेश्वर के हाथों में छोड़ देते हैं—परन्तु अगले दिन उसे तिजोरी की चाबियाँ नहीं सौंप देते हैं। यह कड़वाहट नहीं है। यह बुद्धिमानी है। यह इस बात को स्वीकार करना है कि हम

प्रतिशोध लेने से बचना

पूर्ण पतित संसार में रहते हैं, और कभी-कभी किसी पापी के लिए सबसे प्रेमपूर्ण कार्य यह करना होता है कि उसके लिए आपके विरुद्ध फिर से पाप करना असम्भव बना दिया जाए।

कठिनाई यह है कि सीमा तो बनाई जाए, परन्तु अपनी ओर घृणा की सड़न को बढ़ने न दिया जाए। यहीं पर हममें से अधिकतर लोग असफल हो जाते हैं। हम एक सीमा तो बना लेते हैं, परन्तु उसे कड़वाहट के काँटेदार तार से घेर देते हैं। हम सोचते हैं कि हम स्वयं की रक्षा कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में हम अपने ही प्राण के लिए एक पिजरा बना रहे होते हैं। कड़वाहट तब उत्पन्न होती है जब हम उस व्यक्ति को, जिसने हमें ठेस पहुँचाई है, अपने मन में बिना किसी मूल्य के रहने देते हैं। यह उस "व्यर्थ अभिमान" का परिणाम है जिसमें हम सोचते हैं कि क्रोधित बने रहकर हम किसी न किसी प्रकार से जीत रहे हैं।

आप दोनों में अन्तर कैसे पहचान सकते हैं? एक सीमा शान्त होती है। वह चिल्लाती नहीं है। उसे इस बात पर बीस मिनट का भाषण देकर उचित ठहराने की आवश्यकता नहीं होती कि आपके साथ कितना अन्याय हुआ है। वह "नहीं" है। यह हानि के चक्र को रोकने का निर्णय है। दूसरी ओर, कड़वाहट शोर करती है। यहाँ तक कि जब वह मौन होती है, तब भी वह चिल्ला रही होती है। वह उस अपराध को बार-बार मन में दोहराते रहना है। वह यह इच्छा है कि दूसरा व्यक्ति दुःख उठाए। यदि आप स्वयं को उसकी असफलता के विचार से आनन्दित पाते हैं, तो आप बुद्धिमानी का अभ्यास नहीं कर रहे हैं; आप घृणा का अभ्यास कर रहे हैं। और घृणा ऐसी आग है जो अन्ततः उस व्यक्ति को भस्म कर देगी जो उसे अपने भीतर लिए हुए फिरता है।

छुटकारा पाए हुए जीवन की पहचान निर्णय लेने की दृढ़ता से होती है, और यह तब सबसे अधिक आवश्यक होती है जब आप यह निर्णय ले रहे होते हैं कि सीमा कहाँ निर्धारित करनी है। आपको अपने प्रति इतना ईमानदार होना चाहिए कि आप समझ सकें कि कब आप अपनी आत्मा की रक्षा कर रहे हैं और कब अपने अभिमान को सहला रहे हैं। सीमाएँ राज्य की शान्ति को बनाए रखने के लिए होती हैं, न कि अहंकार की व्यर्थ बात को बचाने के लिए। जब आप अनुग्रह के स्थान से सीमा निर्धारित करते हैं, तो आप उसे स्थिर हाथ से कर सकते हैं। सीमा बनाने के लिए आपको क्रोध की गर्मी की आवश्यकता नहीं है, परन्तु आपको वचन के उजियाले की आवश्यकता है।

शान्ति स्थापित करने वाले की बुलाहट

हम प्रायः "शान्ति स्थापित करने" और "शान्ति बनाए रखने" में भ्रमित हो जाते हैं। एक शान्ति बनाए रखने वाला व्यक्ति केवल वातावरण को शान्त रखने के लिए सड़न को अनदेखा कर देता है, परन्तु शान्ति स्थापित करने वाला व्यक्ति उस कठिनाई का सामना करता है ताकि सच्ची शान्ति आगे बढ़ सके। आपका कार्य दूसरे व्यक्ति को सुधारना नहीं है, क्योंकि आपको उसका पवित्र आत्मा बनने के लिए नियुक्त नहीं किया गया है। आपकी बुलाहट केवल इतनी है कि इस उलझन भरी स्थिति में विश्वासयोग्य बने रहें। यह बहुत अधिक स्वतंत्र करने वाला सत्य है। यदि आप अनुग्रह के साथ आगे बढ़ते हैं और दूसरा व्यक्ति आपके मुँह पर थूक देता है, तो आप असफल नहीं हुए हैं। सफलता का माप आज्ञाकारिता है, परिणाम नहीं। हम प्रबन्धक हैं, फसल के स्वामी नहीं हैं।

जब "विष" से भरे लोगों से व्यवहार करना हो, तो विश्वासयोग्यता प्रार्थना के रूप में दिखाई देती है—ऐसी प्रार्थना नहीं जो केवल सुन्दर शब्दों से भरी हो, वरन् आत्मा की गहराई से निकलने वाली प्रार्थना। आप आरम्भ इस प्रार्थना से करते हैं कि

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

न्यायी अपना कार्य न्यायी के रूप में करे: “हे प्रभु, इस व्यक्ति के साथ अपनी पवित्रता के अनुसार व्यवहार कर।” यह एक भय उत्पन्न करने वाली प्रार्थना है, जो आपके हृदय को सत्य के साथ मिला देती है। वह व्यक्ति आपके हाथों में नहीं, वरन् परमेश्वर के हाथों में है। फिर आप उसके हृदय के लिए प्रार्थना करते हैं कि वह उसी अनुग्रह से टूटे जिसने आपको तोड़ा था। आप इसे अपना कर्तव्य समझकर करते हैं, क्योंकि स्वामी इसकी आज्ञा देता है। जब आप अपनी घृणा की आग पर विनती का जल उँडेलते हैं, तो उसकी गर्मी धीरे-धीरे कम होने लगती है।

यही “हाशिष् पर पड़ा ईश्वर विज्ञान” है। आप धूल में खड़े होकर उस व्यक्ति को देखते हैं जिसने आपको तोड़ने का प्रयास किया, और अपनी तत्काल संतुष्टि के ऊपर उसके परम हित को चुनते हैं। यह “मैं” का मरना है। यह वह क्षण है जब आप महसूस करते हैं कि आप और वह चोर दोनों एक ही मिट्टी से बने हैं, दोनों एक ही श्राप के अधीन हैं, और दोनों को उसी उद्धारकर्ता की अत्यन्त आवश्यकता है।

घायल हृदय का प्रबन्धन

मार्ग लम्बा है। जिम के हाथों की गाँठों पर पड़े घाव मिटने वाले नहीं हैं। आपके हृदय में बना घाव शायद पुनरुत्थान के इस पार पूरी रीति से कभी भर न पाए। हम “पहले से ही, परन्तु अभी तक नहीं” की अवस्था में जीते हैं। हमारे पास मसीह की शान्ति है, परन्तु फिर भी इस संसार का संघर्ष हमारे साथ चलता रहता है।

परमेश्वर के हाथों में छोड़ देने की प्रक्रिया का उद्देश्य ठेस लगने से बचना नहीं है। इसका उद्देश्य यह है कि पीड़ा में रहते हुए भी विश्वासयोग्य बने रहने का मार्ग ढूँढा जाए। यही घायल हृदय का प्रबन्ध करना है। आप एक पुरुष या स्त्री हैं जो एक संकरे मार्ग पर चल रहे हैं, और आपको उन विशेष परीक्षाओं में से होकर निकलने का उत्तरदायित्व दिया गया है जिनका सामना आपको करना है। यह विश्वासघात, यह हानि, यह ख़ाई—यही वह भूमि है जिसमें कार्य करने के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है।

अतीत को सुधारने या भविष्य को बलपूर्वक अपने अनुसार करने का प्रयास करके अपनी उर्जा व्यर्थ न गवाएँ। केवल मंगलवार की सुबह विश्वासयोग्य बने रहें। और जब भीतर से क्रोध का उबाल उठे, तो उसे न्यायी के हाथों में सौंप दें। जब सीमा की आवश्यकता हो, तो उसे बुद्धिमानी से निर्धारित करें। जब शलु का उल्लेख हो, तो उसे प्रार्थना में सिंहासन के पास ले जाएँ। यही मसीही जीवन का कठोर परिश्रम है। यह उस प्रकार से ‘जीवन्त’ या ‘परिवर्तनकारी’ नहीं है, जैसा संसार की आकर्षक भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।

यह भारी है, यह धीमा है, और प्रायः बहुत शान्त है।

और यही क्रूस का मार्ग है। यही वह मार्ग है जिस पर चरवाहा चला था। जब आप इस मार्ग पर चलते हैं, तो आप पाएँगे कि आपके सम्मान का भार और आपके दुःख का भार धीरे-धीरे उस महिमा के भार में परिवर्तित हो रहे हैं जिसे यह संसार समझ नहीं सकता है। आप अपनी परिस्थितियों से पीड़ित नहीं हैं, वरन् उस राजा की व्यवस्था में सहभागी हैं जो कभी किसी आँसू को व्यर्थ नहीं जाने देता है।

प्रतिशोध लेने से बचना

न्याय का हथौड़ा छोड़ दो; और सेवा करने का कटोरा उठा लो। न्यायी को अपना कार्य करने दो, और आप अपना कार्य करें। मार्ग कठिन है, परन्तु वचन अटल है। और एक दिन, यह संघर्ष समाप्त हो जाएगा, धूल हट जाएगी, और हम देखेंगे कि जिस मार्ग को हम काँटों से भरा हुआ अव्यवस्थित मार्ग समझते थे, वह वास्तव में घर ले जाने वाला मार्ग था।

5

अन्तिम न्यायालय

हम सबके भीतर यह कचोटती हुई आशंका बनी रहती है कि दुष्ट लोग जीत जाते हैं। हम उस चोर को देखते हैं जो धनवान होकर मर जाता है, और उस माता-पिता को भी देखते हैं जो यह कहे बिना ही कब्र में चले जाते हैं, कि “मुझे क्षमा कर दो।” हमारी अस्थियों तक में यह अनुभूति होती है कि यदि हम अभी इसका बदला न लें, तो यह संसार अनियन्त्रित बुराई के अधीन हो जाएगा। हम परमेश्वर की चुप्पी को दोषी के बच निकलने का प्रमाण समझ बैठते हैं। परन्तु यह उस आत्मा की व्यर्थता है जिसने क्रूस को भुला दिया है। परमेश्वर के संसार में कोई भी किसी बात से “बचकर नहीं निकल सकता।” न एक पैसा। न एक विश्वासघात। हम उस प्रभुता सम्पन्न न्यायी के अधीन रहते हैं जिसका न्याय का तराजू वर्षों के बीत जाने पर भी कभी नहीं झुकता है। अन्तिम न्यायालय एक सजीव वास्तविकता है, और प्रत्येक पाप का मूल्य चुकाना ही पड़ता है। या तो मसीह ने क्रूस पर परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर सह लिया, अथवा पापी को न्याय के दिन उसका सामना करना पड़ेगा। तीसरा कोई भी विकल्प नहीं है। कोई भी बचकर नहीं निकल सकता है।

न्याय के रूप में क्रूस

हम प्रायः क्रूस के विषय में प्रेम के इस ज्योतिर्मय और आनन्दमय प्रतीक के रूप में बात करते हैं। परन्तु विश्वासी के लिए क्रूस मानव इतिहास में न्याय का सबसे भयावह प्रदर्शन रहा है। यह हमें दिखाता है कि पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा इतनी भारी और अटल है कि वह एक भी ऋण को चुकाए बिना नहीं छोड़ना चाहता; इसलिए उसने अपने ही पुत्र को कुचल देना स्वीकार किया। जब आप इस बात को महसूस करते हैं, तो व्यक्तिगत प्रतिशोध लेने की “आवश्यकता” छोटी और दयनीय दिखाई देने लगती है। यदि जिस व्यक्ति ने आपको ठेस पहुँचाई है वह मसीह में है, तो उसके पाप का दण्ड पहले ही ऐसी कठोरता के साथ दिया जा चुका है जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यदि वह मसीह में नहीं है, तो वह ऐसे न्यायालय की ओर बढ़ रहा है जहाँ आपका “बराबरी करने” का छोटा सा प्रयास ऐसा दिखाई देगा मानो कोई बालक पर्वत पर कंकड़ फेंक रहा है।

इस सत्य को महसूस करना ही एकमात्र बात है जो आपको फिर से शान्ति की साँस लेने देता है। यह इस बात को जानने से मिलने वाली राहत है कि लेखा उस व्यक्ति के द्वारा रखा जा रहा है जो वास्तव में गिनती करना जानता है। जब आप उस व्यक्ति को देखते हैं जिसने आपकी प्रतिष्ठा को नष्ट किया या आपके परिश्रम का फल छीन लिया है, तो आपको स्वयं आग लगाने वाली तीली हाथ में रखने की आवश्यकता नहीं है। आपको ऋण वसूलने वाले के समान जागते रहने की भी आवश्यकता नहीं है। वह ऋण पहले ही एक उच्च न्यायालय को सौंप दिया गया है। यह केवल “छोड़ देना” नहीं है; वरन्

प्रतिशोध लेने से बचना

यह पहचानना है कि वास्तविक अधिकार किसके पास है। किसी को भी छूट नहीं मिलेगी। इस सृष्टि की नैतिक दिशा केवल न्याय की ओर ही नहीं झुकती है—वरन् उसे एक ऐसे राजा की लोहे जैसी दृढ़ पकड़ में थामे रखा गया है जो प्रभुता सम्पन्न है।

शान्त आत्मा का प्रतिफल

और यहीं से शान्ति बढ़ने लगती है—अर्थात् शान्त आत्मा का प्रतिफल। हम अपना जीवन निरन्तर सतर्क तनाव की अवस्था में बिताते हैं, क्योंकि हम ऐसी क्षमा-याचना की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं जो कभी आने वाली नहीं है। हम सोचते हैं कि हमारी शान्ति उस व्यक्ति के हाथों में बन्धक है जिसने हमें ठेस पहुँचाई है। हम कहते हैं, कि “मैं तब ठीक हो पाऊँगा, जब वह स्वीकार करेगा कि उसने क्या किया।” परन्तु यदि वह कभी ऐसा न करे तो क्या होगा? यदि वह इस विश्वास के साथ मर जाए कि वही पीड़ित था? यदि आपकी आत्मा की शान्ति इस बात पर निर्भर है कि वह व्यक्ति आपसे कहे कि “मुझे क्षमा करें” तो आप दास हैं।

परन्तु शान्त आत्मा ऐसी शान्ति पाती है जो दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं होती है। यह वह शान्ति है जो भीतर की गहराई से ऊपर उठती है। यह वह विश्वास है जो कहता है, कि “न्यायी देखता है। इतना ही पर्याप्त है।” उस मनुष्य में एक दृढ़ गरिमा होती है जो ऐसे लोगों से भरे हुए कमरे में भी चुपचाप चलता है, जहाँ लोग उसके विषय में झूठी बातों पर विश्वास करते हैं। वह इसलिए शान्त नहीं रहता कि वह दुर्बल है, वरन् इसलिए कि वह स्थिर नींव पर टिका हुआ है। वह जानता है कि उसकी प्रतिष्ठा उसने स्वयं नहीं बनाई, इसलिए उसे अपने ही परिश्रम और संघर्ष से उसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। वह परमेश्वर का है।

इस शान्ति को पाना प्रबंध करने का एक कार्य है। आप यह निर्णय कर रहे हैं कि आपका हृदय इतना अनमोल है कि वह किसी और के कूड़े को रखने का स्थान न बने। आप उस ऋण को कूस के चरणों में छोड़ने का चुनाव कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि दूसरा व्यक्ति इसके योग्य है, वरन् इसलिए कि आप उस बोझ से स्वतंत्र होने के योग्य हैं। “शान्त आत्मा” का अर्थ यह नहीं है कि आप दूसरों के द्वारा कुचले जाने वाले व्यक्ति बन जाएँ। इसका अर्थ तो यह है कि आप आँधी के बीच में भी एक चट्टान के समान दृढ़ बने रहें। इसका अर्थ यह जानना है कि अन्तिम निर्णय उस न्यायी के द्वारा पहले ही लिख दिया गया है जो आपसे प्रेम करता है, और कोई चोर या झूठा व्यक्ति जो कुछ भी कहे, वह उस पृष्ठ की स्याही को नहीं बदल सकता है।

प्रावधान में विश्राम करना

यह हमें जीवन-पथ के सबसे कठिन भाग तक ले आता है: जब जीवन स्पष्ट रूप से अन्यायपूर्ण हो, तब परमेश्वर की देखभाल में विश्राम करना। हम यह विश्वास करना चाहते हैं कि यदि हम “प्राचीन मार्गों” पर चलते हैं, तो हमारा जीवन सरल और सुगम होगा। हम सोचते हैं कि “विश्वास” का अर्थ है कि व्यापार सफल हो और परिवार सुखी हो। परन्तु बाइबल कभी भी सरल मार्ग की प्रतिज्ञा नहीं करती है। वह एक ऐसे अटल चरवाहे की प्रतिज्ञा करती है जिस पर भरोसा किया जा सकता है।

परमेश्वर की देखभाल पर विश्वास करने का अर्थ है कि परमेश्वर उतना ही चोरी की घटना में उपस्थित है जितना कि वह किसी वरदान में है। वह रोग, विश्वासघात और गहरी खाई में भी उपस्थित है। इसे समझना कठिन हो सकता है, परन्तु यह

उस प्रभुता सम्पन्न परमेश्वर का सत्य है जो लहरों, पासे के फेंके जाने और यहाँ तक कि दृष्ट पर भी नियन्त्रण रखता है। हम ऐसे परमेश्वर की आराधना नहीं करते जो जीवन के “अन्याय” से चकित हो जाता है। परन्तु हम ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं जो आत्मा को ढालने के लिए जीवन की कठिन परिस्थितियों को संचालित करता है। जब जीवन अन्यायपूर्ण हो, तो आपको पूछना चाहिए: कि “स्वामी इसके द्वारा क्या कर रहा है?” सम्भवतः वह आपके घमण्ड को तोड़ रहा है। वह आपकी अपनी सामर्थ्य पर निर्भरता को हटा रहा है। वह आपको “स्वामी के सोने” की ओर देखने और यह महसूस करवाने के लिए विवश कर रहा है कि आरम्भ से ही वह कभी आपका था ही नहीं।

अव्यवस्था के बीच परमेश्वर पर भरोसा करना कोई भावना नहीं है। यह एक ऐसी मांसपेशी है जिसे आप अधिक भार उठाकर विकसित करते हैं। यह उस समय ऐसा कहने का निर्णय है, कि “तेरी इच्छा पूरी हो,” जब आपकी अपनी इच्छा प्रतिशोध लेने के लिए चिल्ला रही हो। तब यह महसूस करना है कि आप इस कहानी के केन्द्र नहीं हैं। आप उस नाटक के एक पात्र हैं जिसे एक राजा ने लिखा है और जो जीवन के प्रत्येक कठिन अनुभव—बिना चुकाए गए बिल, माता-पिता की क्षीण होती बुद्धि, वह साथी जो आपको छोड़कर चला गया—का उपयोग आपको ऐसी महिमा के भार के लिए तैयार कर रहा है जिसकी आप अभी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

अन्तिम निर्णय

अतः हम संसार के जिम जैसे लोगों के साथ क्या करें? हम उन हाथों के साथ क्या करें जो पीछे के बरामदे में काँपते हैं? हम उन्हें सत्य बताते हैं। हम उन्हें बताते हैं कि तलवार उनके लिए बहुत भारी है और न्याय का हथौड़ा उनके हाथ में रखने के लिए नहीं है। हम उन्हें क्रूस की ओर देखने तथा वहाँ अन्तिम समाधान को देखने के लिए कहते हैं।

मन की कड़वाहट को छोड़ दें। यह ऐसी सड़न है जो आपको मनुष्य की एक छाया मात्र बना देगी। जिस व्यक्ति ने आपको ठेस पहुँचाई है, वह पहले ही बहुत कुछ ले चुका है। उसे अपना भविष्य भी न लेने दें। न्यायी को अपना कार्य करने दें। वह कभी देर नहीं करता, वह किसी भी बात को अनदेखा नहीं करता, और उसके तराजू पूरी रीति से सन्तुलित हैं।

हम अपने हाथों की गाँठों पर पड़े घावों और अपने जूतों पर लगी धूल के साथ इस जीवन -पथ पर चलते हैं, हाँ। परन्तु हम शान्त हृदय के साथ चलते हैं। हम ऐसे लोगों के रूप में चलते हैं जो जानते हैं कि अन्तिम न्यायालय पहले से ही कार्यरत है और राजा सिंहासन पर विराजमान है। हम सेवक हैं, प्रबंधक हैं, जो घर की ओर जाने वाले संकरे मार्ग पर चल रहे हैं। और उस घर में, यह संघर्ष अन्ततः समाप्त हो जाएगा। आँसू उसी हाथ से पोछे जाएँगे जिसने कीलों को सहा था। ऋण भुला दिए जाएँगे, क्योंकि मूल्य चुका दिया गया है।

इस सत्य में विश्राम करें। अपने कर्तव्य में बने रहें। अनुग्रह में बने रहें। मार्ग कठिन है, परन्तु न्यायी भला है। और यही एकमात्र ईश्वर विज्ञान है जो वास्तव में इस जीवन-पथ की कठिनाइयों के बीच स्थिर रह सकता है।



निष्कर्ष

मैं एक ऐसी स्त्री को जानता था जो बीस वर्षों तक एक मुकदमे के भीतर ही जीती रही। उसका जीवन बयान दर्ज कराने, कानूनी खर्चों और ऐसे हृदय का पहाड़ बन गया था जो भट्टे में सुखाई गई ईंट के समान कठोर हो गया था। उसके साथ धोखा हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं था। अन्याय वास्तविक था और उसके प्रमाण भी दर्ज थे। उसने मुझसे कहा कि उसे ऐसा लगता था जैसे वह सत्य की रक्षक है—यदि उसने लड़ना छोड़ दिया, तो झूठ जीत जाएगा। परन्तु दो दशकों के बाद, वह मेरे अध्ययन-कक्ष में आई, बैठी और कहा कि वह मुकदमा छोड़ रही है। उसने एक भी पैसा नहीं जीता था। वास्तव में, उसने समय और शान्ति की एक बड़ी सम्पत्ति खो दी थी।

“अब क्यों?” मैंने पूछा।

उसने अपने हाथों की ओर देखा—वे हाथ जो एक पीढ़ी से मुट्ठियों में बंधे हुए थे—और उसने उन्हें खोल दिया। उसने कहा, “मुझे महसूस हुआ है कि मैं तर्क में जीत रही थी, परन्तु अपनी आत्मा को खो रही थी। मैंने सही सिद्ध होने से भी उत्तम कुछ पाया है। मैंने फिर से सो पाने की क्षमता पाई। मैंने परमेश्वर की प्रभुता को पहचान लिया है।”

यही “खुला हुआ हाथ” है। यह उस आत्मा की अन्तिम गति है जिसने न्याय का हथौड़ा पकड़ने का प्रयास करना छोड़ दिया है। यह उस शान्त हृदय की दशा है जो महसूस करता है कि परमेश्वर का न्याय आपके न्याय से कहीं अधिक भरोसेमन्द है। जब आप अन्ततः अपने मन के बैर के युद्ध-क्षेत्र से दूर चले जाते हैं, तो आप शत्रु के सामने समर्पण नहीं कर रहे होते हैं। परन्तु आप राजा के सामने समर्पण कर रहे होते हैं। आप यह निर्णय ले रहे होते हैं कि आपके जीवन में “स्वामी का सोना” आपकी विश्वासयोग्यता है, न कि स्वयं को निर्दोष सिद्ध करना। आप यह स्वीकार कर रहे होते हैं कि यदि परमेश्वर किसी चोर को आपका धन लेने देता है या किसी झूठे व्यक्ति को आपका नाम बिगाड़ने देता है, तो भी हजारों पहाड़ियों के पशु उसी के हैं। वह उसे फिर से लौटा सकता है जिसे टिड्डियों ने खा लिया है, परन्तु वह उस हृदय को फिर से नहीं लौटा सकता जो पत्थर बन चुका है।

इन पृष्ठों में हमने जिस मार्ग पर चलना सीखा है, वह कठिन और संकरा है। चाहे वह दुर्बल होते माता-पिता का आदर करने का संघर्ष हो या किसी व्यापारिक साथी के विश्वासघात का संघर्ष हो, उत्तर हमेशा एक ही है: क्रूस की ओर देखें। वहाँ अन्तिम न्याय को देखें। उस अन्तिम दया को ओर ताकें। और फिर, परमेश्वर के लिए, मन के बैर को छोड़ दें। यह आप जैसे प्राणी

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

के लिए बहुत भारी है। आपको तलवार उठाकर चलने के लिए नहीं बनाया गया था; आपको ज्योति उठाकर चलने के लिए बनाया गया था।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodore of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

